पाठ - 10

नबी सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम मदीना में

الدرس العاشر - هندي

النبى ﷺ فى المدينة

जहा रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को ऊटनी बैठा था उस जगह का उसक मालिका से खरीदने के बाद आपने मस्जिद की तामीर वहीं की और मुहाजिरीन जो कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मक्का से तशरीफ़ लाए थे और अन्सार अर्थात मदीना वालों में से जिन लोगों ने मुहाजिरों की मदद की, इनके बीच भाइचारा कराया इस तौर कि हर अन्सारी सहाबी का मुहाजिरों में से एक को भाई बना दिया जो उसके माल में शरीक हो। इसके बाद अन्सार व मुहाजिरीन एक साथ काम करने लगे और उनके बीच भाई चारगी का रिश्ता मज़बूत हो गया।

कुरैश के मदीना के यहूदियों से दोस्ताना संबंध थे। यही वजह है कि यहूदी भी अपने तौर पर मुसलमानों के बीच बेचैनी और मतभेदों के बीज बोना चाहते थे दूसरी तरफ़ कुरैश के लोग मुसलमानों को खत्म करने की धमकी दिया करते थे। अतएव मुसलमानों को आन्तरिक व बाहरी हर ओर से खतरा था, मामला इतना संगीन हो गया था कि सहाबा किराम रातों में हथियार लेकर सोया करते थे। इस तरह के खतरनाक हालात में अल्लाह तआला ने जिहाद की इजाज़त दी जिसके बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुश्मन की चलत फिरत पर निगाह रखते, मुश्रिकों को मुसलमानों की ताक़त का एहसास दिलाने और उनके दिलों में डर बैठाने के उद्देश्य से तिजारती क़ाफ़िलों को पकड़ने की खातिर इस्लामी सेना की टुकड़ियों को तर्तीब देने लगे ताकि वे लोग सुलह कर लें और इन्हें इस्लाम फैलाने और उस पर अमल के लिए आज़ाद छोड़ दें। इसी उद्देश्य से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ क़बीलों के साथ आपसी सहयोग की सन्धि भी की।

बदर की जंग : एक बार रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शाम से लौट रहे तिजारती क़ाफ़िलों को पकड़ने का इरादा किया। इस उद्देश्य के तहत आप 313 लोगों के साथ निकल पड़े। आपके साथ केवल दो घोड़े और सत्तर ऊंट थे जबकि कुरैश के काफ़िले में एक हजार ऊंट थे जिसकी क़ियादत अबू सुफ़ियान कर रहा था और उसके साथ चालीस लोग थे। अबू सुफ़ियान को मुसलमानों के निकलने का आभास हो गया तो उसने एक क़ासिद मक्का भेजा ताकि वह उन्हें पूरी घटना की खबर पहुंचा दे और उन से मदद तलब करे। इधर अबू सुफ़ियान ने अपना रास्ता बदल दिया और दूसरी राह पर चल पड़ा, जिसकी वजह से मुसलमानों को वह क़ाफ़िला न मिल सका। दूसरी ओर कुरैश एक बड़े लशकर के साथ निकले जिनमें एक हजार जंगजू थे। इस दौरान उनके पास अबू सुफ़ियान के पास से क़ासिद पहुंचा और उसने क़ाफ़िले के सही और सुरक्षित बच जाने की सूचना दी और उन्हें मक्का वापस जाने को कहा। लेकिन अबू जहल ने वापसी से इन्कार कर दिया और लशकर ने अपना सफ़र जारी रखा।

जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुरैश के निकलने की खबर पहुंची तो आपने सहाबा से मशवरा किया। तमाम लोगों ने काफ़िरों और उनके सैनिकों का सामना करने की राय दी। 17 रमज़ानुल मुबारक सन 2 हिजरी की सुबह दोनों पक्षों की मुठ भेड़ हुई और दोनों के बीच खतरनाक और घमासान जंग हुई और मुसलमानों की जीत के साथ जंग का खात्मा हुआ। 14 मुसलमान शहीद हुए जबकि मुश्रिकों में से सत्तर मारे गए और इतने ही लोग गिरफ़्तार भी हुए। जंग के दौरान ही रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी और उसमान रजियल्लाहु अन्हु की जीवन साथी रुक़य्या का इन्तक़ाल हो गया जिनके साथ उनके पति मदीना में ठहरे हुए थे और इस जंग में शरीक नहीं हो सके थे क्योंकि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपनी बीमार पत्नी के पास रहने का हुक्म दिया था। जंग के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसमान रजियल्लाहु अन्हु से अपनी दूसरी बेटी उम्मे कुलसूम की शादी कर दी, इसी वजह से उसमान रजियल्लाहु अन्हु को ज़ुन्नूरैन कहा जाता है। क्योंकि उनके निकाह में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो बेटियां आयीं।

जंगे बदर के बाद मुसलमान अल्लाह की मदद से खुश होकर मदीना वापस हो गए। उनके साथ क़ैदी और ग़नीमत का माल भी था। क़ैदियों में से कुछ ने अपनी जान का फ़िदया दिया और कुछ लोगों को बिना फ़िदया के छोड़ दिया गया और कुछ लोगों का फिदया यह था कि वे दस मुसलमान बच्चों को पढ़ना और लिखना सिखाएं।